समुदाय शिक्षण प्रतिमान
शिक्षक शिक्षा में एक श्रेष्ठ व्यवहार

नीतिन कुमार ढाढोदरा*
भरत जोशी**

इस लेख का प्रमुख उद्देश्य गुजरात विद्यापीठ के शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षक शिक्षा में प्रयुक्त एक श्रेष्ठ नवाचार, 'समुदाय शिक्षण प्रतिमान' को उजागर करना है। इसमें परंपरागत पाठ की तुलना में समुदाय शिक्षण प्रतिमान की विशेषताएँ निर्दिष्ट की गई हैं। समुदाय शिक्षण प्रतिमान के विभिन्न पहलू, जैसे — पाठ के उद्देश्य, पाठशाला, शिक्षक, विद्यार्थी, विषय-वस्तु, समय-सीमा, पद्धति-प्रयुक्ति, गृह-कार्य, निरीक्षण-मूल्यांकन और प्रतिपोषण पर प्रकाश डाला गया है। अंत में इस प्रतिमान पर आधारित पाठ से विद्यार्थी-शिक्षक, शिक्षक शिक्षा संस्थान एवं समुदाय को मिलने वाले लाभ की चर्चा की गई है। समुदाय शिक्षण प्रतिमान विद्यार्थी-शिक्षक के सामाजिक उत्तरदायित्व को विकसित करने में अहम भूमिका अदा कर सकता है। प्रभावी शिक्षक एवं शिक्षण हेतु कई आवश्यक कौशल इस प्रतिमान से विकसित हो सकते हैं। शिक्षा की उपादेयता सिद्ध करने तथा समाज की समस्याओं को हल करने में यह प्रतिमान अति महत्वपूर्ण हो सकता है।

महात्मा गांधी ने कहा है कि सामाजिक पुनःनिर्माण एवं चेतना को विकसित करने के लिए शिक्षा एक बुनियादी उपकरण है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को शरीर, मन और आत्मा के विकास का साधन माना है। वहीं शिक्षक को समाज के समग्र व्यक्तित्व के विकास का उत्तरदायित्व सौंपा है। किंतु शिक्षकों ने अपनी भूमिका और उत्तरदायित्व को मर्यादित बनाकर रख दिया है। वे केवल पठन, लेखन और गणन से ही संबंध रखते हैं। ज़्यादा-से-ज़्यादा वे परीक्षा के लिए सूचित पाठ्यक्रम को पूर्ण करते हैं (National Commission on Teachers–1, 1983)। शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 (एन.सी.एफ.टी.ई.) में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को प्रभावी बनाने की अपेक्षा रखते हुए बताया गया है कि यह कार्यक्रम विद्यार्थी-शिक्षक को सामाजिक संवेदनशीलता एवं चेतना तथा मानवीय संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक होना चाहिए। साथ ही यह भी कहा गया है कि हम ऐसे शिक्षक की अपेक्षा रखते हैं जो शांति के मूल्यों, लोकशाही जीवन शैली, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, भाईचारा, असांप्रदायिकता और सामाजिक पुनःनिर्माण के लिए उत्साही हो (एन.सी.एफ.टी.ई. 2009, पृ. 21)। पर क्या हमारे शिक्षक शिक्षा संस्थान यह अपेक्षाएँ पूरी करते हैं? शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम

* *शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, गुजरात विद्यापीठ, आश्रममार्ग, अहमदाबाद, गुजरात – 380014
** *प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग, गुजरात विद्यापीठ, आश्रममार्ग, अहमदाबाद, गुजरात – 380014

में इस अपेक्षा को पूर्ण करने हेतु आज भी हम समग्र रूप से कोई श्रेष्ठ व्यवहार को नहीं अपना सके हैं।

राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद्, 2014 ने बी.एड. के द्विवर्षीय ढाँचे में भावी शिक्षकों की व्यावसायिक सज्जता के विकास हेतु व्यावसायिक क्षमतावर्धन (Enhancement of Professional Capacities) बंधित कार्यक्रमों को स्थान दिया है और इस बात पर बहुत ही ज़ोर दिया है कि इंटर्नशिप के दौरान भावी शिक्षकों को नियमित शिक्षक के रूप में ही कार्य करना होगा जिसमें आयोजन, शिक्षण, मूल्यांकन और पाठशाला के शिक्षक, समुदाय के सभ्य लोगों एवं बालकों के साथ पारस्परिक विचार-विमर्श का भी समावेश होता है (राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् विनियम, 2014, पृ. 2)। समुदाय शिक्षण प्रतिमान, व्यावसायिक क्षमतावर्धन के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक बनता है।

जोशी और दीक्षित (2012), वर्तमान शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की समाजोन्मुखता के बारे में कहते हैं कि शिक्षक के उत्तरदायित्व को मात्र वर्ग-खंड तक सीमित कर दिया गया है तथा संबंधित कौशलों को ही सिखाया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षकों को न तो सामाजिक समस्याओं की जानकारी होती है, न उसके कारणों की खोज के प्रति रुचि। इस दिशा में पर्याप्त शिक्षण-प्रशिक्षण न मिलने के कारण शिक्षकों में इन समस्याओं के समाधान के लिए अपेक्षित ज्ञान एवं कौशल का विकास नहीं हो पा रहा है। इसलिए शिक्षण-प्रशिक्षण के द्वारा तैयार हुआ शिक्षक, आजीवन समाज की उपेक्षा कर अपने आप में सीमित रहता है। समुदाय शिक्षण प्रतिमान भावी शिक्षक को समाज और सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाता है। प्रस्तुत प्रपत्र में गुजरात विद्यापीठ के शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षक शिक्षा में प्रयुक्त नवाचार 'समुदाय शिक्षण प्रतिमान' को उजागर किया गया है। शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में यह प्रतिमान 'जोशी का समुदाय शिक्षण प्रतिमान' (Joshi's Innovative Model for Community Education) नाम से जाना जाता है (जोशी, 2014)। विद्यार्थी शिक्षक इस प्रतिमान का उपयोग करके पाठ दे सकते हैं। इस प्रपत्र में परंपरागत पाठ की तुलना में समुदाय शिक्षण प्रतिमान आधारित पाठ की विशेषताएँ निर्दिष्ट की गई हैं। समुदाय शिक्षण प्रतिमान के विभिन्न पहलुओं, जैसे—पाठ के उद्देश्य, पाठशाला, शिक्षक, विद्यार्थी, विषय-वस्तु, समय-सीमा, पद्धति-प्रयुक्ति, गृह-कार्य, निरीक्षण-मूल्यांकन और प्रतिपोषण (feedback) पर प्रकाश डाला गया है।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान के प्रमुख उद्देश्य

समुदाय शिक्षण प्रतिमान के प्रमुख उद्देश्य हैं—

- विद्यार्थी-शिक्षकों के सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना।
- पाठशाला, शिक्षा और समाज के मध्य संबंध स्थापित करना।
- सामाजिक विकास के लिए विद्यार्थी-शिक्षकों को तैयार करना।
- समाजोत्थान में शिक्षक की भूमिका स्पष्ट करना
- विद्यार्थी-शिक्षकों की सामाजिकता का विकास करना।
- विद्यार्थी-शिक्षकों को सामाजिक समस्याओं एवं चुनौतियों के प्रति अवगत कराना तथा उन समस्याओं के उपाय खोजने में सक्षम बनाना।
- विद्यार्थी-शिक्षकों में समाज परिवर्तक के गुण विकसित करना।

- सामाजिक समस्याओं के उन्मूलन हेतु आयोजित कार्यक्रमों का नेतृत्व कर सके, ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना।
- विद्यार्थी-शिक्षकों में सामाजिक विकास हेतु विभिन्न प्रवृत्तियों एवं कार्यक्रमों का आयोजन और संचालन की क्षमता का निर्माण करना।
- विद्यार्थी-शिक्षक में व्यावसायिक क्षमताओं और सर्जनात्मकता को विकसित करना।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान में पाठशाला

परंपरागत पाठ, कक्षा की चहारदीवारी के अंदर दिए जाते हैं। किंतु, इस प्रतिमान आधारित पाठ की पाठशाला समाज है। विद्यार्थी-शिक्षक यह पाठ कक्षा के अंदर नहीं, बल्कि समाज या लोगों के बीच प्रस्तुत करता है। गली, मोहल्ला, गाँव, चौराहा, शहर कहीं भी जहाँ पर लोग बसते हों, ऐसा सार्वजनिक स्थल समुदाय शिक्षण प्रतिमान की पाठशाला बनता है। कोई भी सार्वजनिक स्थान, जैसे—बस अड्डा, रेलवे स्टेशन, सब्ज़ी मंडी, ग्राम पंचायत, खेल परिसर, उद्यान इत्यादि समुदाय शिक्षण प्रतिमान की पाठशाला के रूप में स्थान ले सकते हैं।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान में समय-सीमा

परंपरागत पाठ की समय-सीमा 30 मिनट से लेकर 60 मिनट तक की होती है। वैसे भी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में पढ़ रहे विद्यार्थी-शिक्षक 35 मिनट की समय-सीमा के अभयस्त होते हैं, लेकिन इस पाठ की समय-सीमा निर्धारित नहीं होती। 30 मिनट से लेकर दो घंटे तक का पाठ हो सकता है। पाठ की विषय-वस्तु और विषय-वस्तु निरूपण की पद्धति या प्रयुक्ति के आधार पर समय-सीमा निर्धारित होती है।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान में शिक्षक और विद्यार्थी

सामान्यतः एक पाठ में एक ही शिक्षक शिक्षण कार्य करता है, लेकिन इस प्रतिमान आधारित पाठ में एक ही पाठ में, एक से ज़्यादा शिक्षक कार्य करते हैं। एक से ज़्यादा शिक्षक मिलकर समुदाय की लाक्षणिकता को ध्यान में रखकर विषय-वस्तु निर्धारित करते हैं। विषय-वस्तु और उसकी निरूपण शैली के अनुसार शिक्षकों की संख्या निर्धारित की जाती है। ज़्यादातर इस प्रतिमान आधारित पाठ में चार-पाँच शिक्षक मिलकर शिक्षा कार्य करते हैं।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान की पद्धतियाँ और प्रयुक्तियाँ

परंपरागत पाठ में विषय-वस्तु निरूपित करने की पद्धतियाँ और प्रयुक्तियाँ लेखन या वाचन-केंद्रित होती हैं। विषय-वस्तु निरूपण की पद्धतियाँ-प्रयुक्ति में लोग अथवा समुदाय मनोरंजन के साथ-साथ मनोमंथन कर सकें, इस बात पर प्रतिमान आधारित पाठ ज़ोर देता है। इस प्रतिमान आधारित पाठ में विद्यार्थी-शिक्षक अन्य विद्यार्थी-शिक्षकों की सहायता से नाटक, मूक-अभिनय, गान, समूहगान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, चर्चा-सत्र, नुक्कड़ नाटक, वार्ता-कथन, गरबा गान, कठपुतली खेल, ग्रामसभा, पोस्टर, प्रदर्शन, खेल, भवाई, वीडियो निदर्शन जैसी पद्धति या प्रयुक्ति से शिक्षा कार्य करता है।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान में विषय एवं विषय-वस्तु

इस प्रतिमान का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थी-शिक्षकों के सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है। इसलिए इसकी विषय-वस्तु, समाज की समस्याओं

से संबंधित होती है। जो विद्यालयी शिक्षा की विषय-वस्तु से संबंधित हो सकती है या नहीं भी हो सकती है। समुदाय शिक्षण प्रतिमान की विषय-वस्तु पाठ्यपुस्तक में से नहीं, किंतु समाज में से चयनित होती है। स्थानीय वातावरण, समुदाय, पर्यावरण या संस्कृति के विकास के लिए आवश्यक बिंदुओं को इस पाठ की विषय-वस्तु में स्थान दिया जाता है। लोग या समाज के विकास में सहायक या बाधारूप तत्वों को उजागर करने वाले बिंदु, विषय-वस्तु के रूप में स्वीकार्य बनते हैं। जैसे कि बाल विवाह की अवैज्ञानिकता, बचत का महत्व, जाति भेद, जेंदर भेद, जनसंख्या में वृद्धि, मतदान का महत्व आदि समुदाय शिक्षण प्रतिमान की विषय-वस्तु हो सकते हैं। पर्यावरणीय समस्याओं को उजागर करने वाले मुद्दे भी इस प्रकार के पाठ की विषय-वस्तु हो सकते हैं, जैसे कि जल बचाओ, प्रदूषण निवारण, पेड़ का महत्व, शहरीकरण, स्वच्छता का महत्व, ऊर्जा बचत आदि इस पाठ के विषय बन सकते हैं। लोगों के व्यक्तित्व एवं विचारों को निखारने वाले विषय, जैसे कि व्यसन मुक्ति, स्थानिक स्वराज की संस्थाएँ, भारतीय संविधान, मूलभूत अधिकार, अंधश्रद्धा, वाचन का महत्व, स्वास्थ्यवर्धक खुराक, व्यायाम के लाभ आदि इस पाठ की विषय-वस्तु हो सकते हैं। संक्षिप्त में, ऐसा कह सकते हैं कि समाज को प्रगति के पथ पर ले जाने वाला कोई भी मुद्दा इस पाठ की विषय-वस्तु हो सकता है।।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान में मूल्यांकन

समुदाय शिक्षण प्रतिमान आधारित पाठ के दौरान विद्यार्थी-शिक्षक का मूल्यांकन शिक्षक-प्रशिक्षक, निरीक्षक के रूप में करते रहते हैं। इस प्रकार का मूल्यांकन सहभागी या असहभागी भी हो सकता है। शिक्षक-प्रशिक्षक जब विद्यार्थी-शिक्षक के पाठ का मूल्यांकन करता है, तब पाठ आयोजन, साधन-सामग्री का विनियोग, सहयोग के लिए किए गए प्रयास, प्रवृत्ति का आयोजन और संचालन, वातावरण-सर्जन, विषय-प्रवेश, प्रवृत्ति-प्रभुत्व, शिक्षक की सक्रियता, शिक्षक का व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और प्रतिबद्धता जैसे दस बिंदुओं पर आधारित मानदंड को ध्यान में रखा जाता है।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान में गृह-कार्य

परंपरागत पाठ के अंत में विद्यार्थी-शिक्षक सभी विद्यार्थियों को गृह-कार्य देते हैं। दूसरे दिन वे विद्यार्थी गृह-कार्य को लिखित या मौखिक रूप से प्रस्तुत करते हैं। किंतु इस प्रतिमान आधारित पाठ में गृह-कार्य का स्वरूप अलग होता है, पाठ के अंत में यहाँ पर विद्यार्थी-शिक्षक लोगों को विषय-वस्तु के अनुरूप संकल्पबद्ध करने का प्रयास करते हैं। पाठ के अंत में, पाठ के सार तत्व को लोगों के मानसपटल पर दृढ़ किया जाता है। विद्यार्थी-शिक्षक पाठ की विषय-वस्तु से लोगों की गैर मान्यता को खंडित करने का प्रयास करता है। समुदाय और लोगों के विचारों को परिवर्तित करने तथा मान्यता में बदलाव लाने का प्रयास विद्यार्थी-शिक्षक की ओर से होता है।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान में प्रतिपोषण

परंपरागत पाठ में जब विद्यार्थी-शिक्षक शिक्षा कार्य करता है, तब निरीक्षक कक्षा में बैठकर या वीडियो रिकॉर्डिंग देखकर शिक्षा कार्य में सुधार हेतु लिखित या मौखिक रूप से प्रतिपोषण देते हैं। इस प्रतिमान आधारित पाठ में निरीक्षक दूर से विद्यार्थी-शिक्षक के पाठ का निरीक्षण करता रहता है। कभी-कभी

विद्यार्थी-शिक्षक के पाठ में शामिल होकर सहभागी अवलोकन भी करता है, आवश्यकता होने पर प्रतिपोषण देता रहता है। यहाँ पर पाठ पूर्ण होने के बाद निरीक्षक विद्यार्थी-शिक्षकों से चर्चा करके भी प्रतिपोषण देते हैं। कभी-कभी लोग या समुदाय की ओर से भी प्रतिपुष्टि ली जाती है। सुविधा होने पर वीडियो रिकॉर्डिंग या फ़ोटोग्राफ़ की सहायता से भी प्रतिपोषण देने का या समीक्षा करने का प्रयास होता है। सह-विद्यार्थी-शिक्षक से भी प्रतिपोषण लिया जाता है।।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान के लाभ

समुदाय शिक्षण प्रतिमान से, विद्यार्थी-शिक्षक, शिक्षक शिक्षा संस्थान और समाज को विशेष लाभ होता है। समुदाय शिक्षण प्रतिमान पर हुए पूर्व अनुसंधान (जोशी, 2014 एवं जोशी और दीक्षित 2012) के निष्कर्ष यह बताते हैं कि विद्यार्थी-शिक्षक को केंद्र में रखकर देखा जाए तो उसके सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास होता है। विद्यार्थी-शिक्षक समूह या दल में काम करने की क्षमता प्राप्त करता है। सामाजिक समस्याओं को सुलझाने के लिए विद्यार्थी-शिक्षक में नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता विकसित होती है। एक प्रभावी शिक्षक बनने के लिए ज़रूरी कौशलों, जैसे—गान, अभिनय, लेखन, पठन, कथन, संचालन, संवाद, मंचन आदि का विकास होता है। विद्यार्थी-शिक्षक समाज के साथ संबंध प्रस्थापित करने की कला सीखता है। समाजोत्थान के लिए ज़रूरी कार्यक्रमों का आयोजन और अमलीकरण करने की सूझ-बूझ का विकास होता है। विद्यार्थी-शिक्षक की सामाजिकता में वृद्धि होती है, सामाजिक समस्याओं के प्रति विद्यार्थी-शिक्षक को संवेदनशील बनाया जा सकता है। विद्यार्थी-शिक्षक में विभिन्न सृजनात्मक और कलात्मक शक्तियों का आविष्कार होता है, व्यावसायिक क्षमताओं का संवर्धन होता है और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि विद्यार्थी-शिक्षक का भी अच्छी तरह से समाजीकरण होता है।

इस प्रतिमान आधारित पाठ से शिक्षक शिक्षा संस्थान को भी कई लाभ प्राप्त होते हैं। संस्थान और समाज के मध्य सकारात्मक संबंध प्रस्थापित होता है, संबंध ज़्यादा मज़बूत बनते हैं। संस्था की शैक्षिक प्रवृत्तियों को समुदाय में आदर के साथ स्वीकृति मिलती है। संस्थान लोक कल्याण एवं समुदाय कल्याण हेतु मानव बल या धनराशि का सहयोग सरलता से प्राप्त कर सकता है। समाज में संस्थान का प्रचार बढ़ता है। यू.जी.सी., नैक जैसी संस्थानों के परीक्षण में संस्थान का यह पहलू सकारात्मक बिंदु बनता है।

इस प्रतिमान आधारित पाठ से समुदाय में जाग्रति फैलाई जा सकती है। लोगों के मन में वैचारिक परिवर्तन किया जा सकता है। सामाजिक सुसंवादिता प्रस्थापित करने में समुदाय को सहायता मिलती है। विभिन्न सामाजिक प्रश्नों को सुलझाने के लिए लोगों का सहकार एवं सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। अच्छे विचारों, आदतों और संस्कारों का समावेश समुदाय के लोगों में किया जा सकता है। लोगों के लिए उपयोगी जानकारी का प्रचार और प्रसार इस पाठ की सहायता से किया जा सकता है। इस पाठ के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक एकता बनाने में सफलता मिलती है। समाज को कुप्रथा, अंधश्रद्धा और गैर-मान्यता से मुक्त करने में सहायता मिलती है। लोगों के बीच परिवार भावना, एकता,

सहकार और ऐक्य की भावना का विकास किया जा सकता है।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान कैसे लागू किया जाए?

समुदाय शिक्षण प्रतिमान लागू करने के लिए कोई विशेष सुविधा या दिन की आवश्यकता नहीं होती है। यह कोई अतिरिक्त अभ्यास नहीं है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के विद्यार्थी-शिक्षकों को तालीम के दौरान लगभग 40 पाठ देने होते हैं। इन 40 पाठों में से कोई भी चार-पाँच पाठों में समुदाय शिक्षण प्रतिमान का उपयोग किया जा सकता है। जिस तरह पाठ देने के लिए शिक्षक शिक्षा संस्थान के शिक्षक पाठशाला का संपर्क करते हैं। उसी तरह इस प्रतिमान का जब उपयोग करना हो, तब उस गाँव, शहर, गली या मोहल्ले के प्रतिनिधियों से संपर्क किया जाता है। उन प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करके उपयुक्त स्थान पर इस प्रतिमान का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार गाँव, गली या मोहल्ले के लोग हमारे लिए समुदाय की भूमिका निभाते हैं।

समुदाय शिक्षण प्रतिमान आयोजित करने हेतु आवश्यक सुविधाएँ

समुदाय शिक्षण प्रतिमान आयोजित करने के लिए किसी विशेष सुविधा की आवश्यकता नहीं होती है। एक शिक्षक-प्रशिक्षक, जिसे लोक शिक्षण में विशेष अभिरुचि हो, वह इस पाठ का केंद्र बिंदु होता है। समुदाय शिक्षण प्रतिमान, जिस जगह पर आयोजित होने वाला हो, उस जगह के प्रशासनिक अधिकारियों एवं स्थानीय नेताओं की अनुमति के साथ आयोजित करना उचित होगा। इस प्रतिमान पर आधारित पाठ में विद्यार्थी-शिक्षक अन्य विद्यार्थी-शिक्षकों की सहायता से नाटक, मूक-अभिनय, गान, समूहगान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, चर्चा सत्र, नुक्कड़ नाटक, वार्ता-कथन, गरबा-गान, कठपुतली खेल, ग्राम-सभा, पोस्टर, प्रदर्शन, खेल, भवाई, वीडियो प्रदर्शन जैसी पद्धतियों या प्रयुक्तियों से शिक्षा कार्य करता है। इसलिए शिक्षक-प्रशिक्षक को भी ऐसी पद्धतियों और प्रयुक्तियों का ज्ञान होना आवश्यक है।

उपसंहार

शिक्षक समाज में उच्च आदर्श स्थापित करने वाला व्यक्ति होता है। किसी भी देश या समाज के निर्माण में शिक्षा की अहम भूमिका होती है। समुदाय शिक्षण प्रतिमान विद्यार्थी-शिक्षक के सामाजिक उत्तरदायित्व को विकसित करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। समाज और समाज की समस्याओं को हल करने में शिक्षा की उपादेयता सिद्ध करने हेतु इस प्रतिमान आधारित पाठ का स्थान अति महत्वपूर्ण है। प्रभावी शिक्षक के लिए आवश्यक कहे जा सकने वाले ऐसे कई कौशल, इस पाठ से विकसित हो सकते हैं। भावी शिक्षकों को समाजोन्मुख बनाने में यह प्रतिमान उपयोगी सिद्ध होगा। जोशी (2014) द्वारा प्राप्त समुदाय शिक्षण प्रतिमान (model) एवं देवड़ा डी. एच. (2017) द्वारा लिखित पुस्तक इस पाठ को आयोजित करने हेतु विशेष मार्गदर्शन दे सकते हैं। एन. सी. टी. ई., यू. जी. सी., एन. सी. एफ. टी. ई., एन. पी. ई. और विभिन्न शिक्षा आयोगों ने भावी शिक्षकों के सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित जो अपेक्षाएँ रखी हैं, वह इस पाठ से पूर्ण हो सकती हैं। देश के सभी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में इस पाठ को अवश्य स्थान मिलना चाहिए।

संदर्भ

जोशी, बी. और दीक्षित, महेश नारायण दीक्षित. 2012. समुदाय-शिक्षण प्रतिमान — एक प्रयोग. *संदर्भ*. 2 (1), पृ. 77–84.

जोशी, बी. 2014. *प्रोस्पेक्टिव टीचर्स सेंसिबिलिटी टूवर्ड्स रेस्पॉन्सिबिलिटी फ़ॉर सोशल हार्मनी थ्रू कम्युनिटी एजुकेशन* (रिसर्च प्रोजेक्ट रिपोर्ट). आई.ए.एस.ई. डीम्ड यूनिवर्सिटी, राजस्थान.

देवड़ा, डी.एच. 2017. *लोक शिक्षण*. यूनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद.

राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद्. 2010. *नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क फ़ॉर टीचर एजुकेशन, 2009*. एन.सी.टी.ई., नयी दिल्ली.

—— 2014. *राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् विनियम, 2014*. पृ. 2. एन.सी.टी.ई., नयी दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 1983. *रिपोर्ट ऑफ़ द नेशनल कमीशन ऑन टीचर–1*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली.